आंबेडकर पथ । वर्ष : 1 । अंक : 01 । जनवरी-जून 2024 । ISSN : 3048-7781

# डॉ. आंबेडकर की विचारधारा, आधुनिक समाज व कुछ सवाल

–ज्योति कम्बोज[1]
–ज्योति मलिक[2]

## प्रस्तावना

एक देश की स्वतंत्रता अक्सर उस देश के नागरिकों की स्वतंत्रता से मेल नहीं खाती है। राज्य की अधिकृति और शक्ति अक्सर किसी विशेष वर्ग में समर्थ लोगों से संगठित हो सकती है। भारतीय संविधान के निर्माता डॉ. भीमराव आंबेडकर ने अपने कार्य के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया कि सामाजिक और आर्थिक जीवन में विशेष वर्गों के लोगों की उनकी स्थिति का आधार जन्म पर नहीं, बल्कि उनकी क्षमताओं और योगदान पर रखना चाहिए। उनके अनुसार, समाज को आर्थिक और सामाजिक असमानताओं द्वारा उत्पन्न विभेद को हटाना चाहिए।

डॉ. आंबेडकर, जो 1947 में संसदीय सभा द्वारा गठित संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष थे, ने स्वतंत्र भारत के लिए संविधान बनाने का कार्य किया। उन्होंने राजनीतिक और सामाजिक न्याय की प्राप्ति के लिए एक मूल सिद्धांत को अपनाया और उन्होंने कहा, ''हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र में बदलना होगा। राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं चल सकता जब तक इसके मूल में सामाजिक लोकतंत्र न हो।''[1] उन्होंने सामाजिक और आर्थिक विरोध को हटाने के लिए सकारात्मक कदम उठाने का सुझाव दिया और समृद्धि और समरसता की प्राप्ति के लिए महत्त्वपूर्ण उपायों की बात की।

शोध अध्येता, वित्तीय प्रशासन विभाग, प्रबंधन विद्यापीठ, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा
Email : jyotikamboj21@gmail.com, malikkajal2771996@gmail.com

## भूमिका

डॉ. भीमराव आंबेडकर, भारतीय समाज के एक महत्त्वपूर्ण नेता और समाजशास्त्री रहे हैं, जिनका योगदान आज भी समाज में गहरा प्रभाव डाल रहा है। उनकी विचारधारा ने समाज में असमानता, भेदभाव और अत्याचार के खिलाफ़ खड़े होने की बात की, जिससे आजाद भारत में समृद्धि और सामाजिक समरसता की दिशा में कई कदम बढ़ाए गए हैं।

आंबेडकर जी का योगदान अधिकतम रूप से उनके संविधान से जुड़े दृष्टिकोणों के माध्यम से दिखता है। उन्होंने भारतीय संविधान की रचना में भारतीय समाज के सभी वर्गों को समानता के आधार पर समाहित करने का प्रयास किया और सामाजिक न्याय, समरसता, और सामाजिक एकता की अवधारणा को अपनाया। उनका यह सोचने का तरीका आज भी हमारे समाज के संरचनात्मक और सामाजिक मुद्दों को समझने का एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है। आंबेडकर जी ने अपने विचारों में सामाजिक और आर्थिक असमानता को समाप्त करने, असमानता और अत्याचार के खिलाफ लड़ने और सभी वर्गों को समरसता में जोड़ने की बात की। उन्होंने अपनी विचारधारा से भारतीय समाज को एक सशक्त, समृद्धि से भरा और विकसित समाज बनाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के समान अधिकारों की बात की। उन्होंने शिक्षा को आधिकारिक रूप से सभी के लिए सुलभ बनाने का प्रयास किया ताकि असमानता के कारण किसी भी व्यक्ति के लिए विकसित होने का मौका न छूटे।

डॉ. बी.आर. आंबेडकर संभवतः भारत के पहले राजनैतिक चिंतक हैं जिन्होंने पश्चिमी प्रणाली के लोकतंत्र को भारत में अनुपयोगी समझा। वॉल्टर बेजहॉट या अब्राहम लिंकन द्वारा दिए गए लोकतंत्र की परिभाषाएं आंबेडकर को संतोषप्रद नहीं लगीं। बेजहॉट लोकतंत्र को 'चर्चा द्वारा सरकार' की परिभाषा देते हैं, और लिंकन ने इसे 'जन, जन्मभूमि और जनहित की सरकार' कहा है। 'लोकतंत्र' से आंबेडकर ने जनता के सामाजिक और आर्थिक जीवन में मौद्रिक परिवर्तन का संकेत किया है, जिन्हें लोगों द्वारा विवाद और खड्ग के बिना स्वीकृत कर लिया जाना चाहिए।

उन्होंने आर्थिक और सामाजिक असमानताओं से उत्पन्न विरोधाभासों को हटाने का उद्देश्य रखा। भारतीय राजनीतिक जीवन के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक जीवन में एक मन, एक वोट और एक मूल्य के सिद्धांत को स्थापित करना चाहा, सबसे बड़ी बात यह है।

आंबेडकर, भारतीय समाज के संरचनात्मक निर्माता के रूप में एक अद्वितीय और महत्त्वपूर्ण व्यक्ति थे, जिनका योगदान दलित मसीहा से भी परे रहा है जो आधुनिक भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक निर्माण में सकारात्मक परिणाम लाया। उनकी सोचने का तरीका और कार्रवाइयों ने भारतीय समाज को विभिन्न प्रश्नों का सामना करने के लिए प्रेरित किया और सामाजिक समृद्धि की दिशा में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन किया।

डॉ. आंबेडकर ने अपने जीवन में दलितों के हक और समाज में समानता के लिए संघर्ष किया और उन्होंने भारतीय संविधान को तैयार करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका यह योगदान न्यायपूर्ण समाज की रचना में एक नए दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने में मदद करता है, जिसमें सभी वर्गों के लोगों को समानता, स्वतंत्रता और अधिकारों का सामर्थ्य है।[2]

डॉ. आंबेडकर ने समाज में जातिवाद, असमानता और उत्पीड़न के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद की और दलितों को समर्थ बनाने के लिए समाज में शिक्षा, रोजगार और समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने के लिए कई उपायों को प्रोत्साहित किया।

आधुनिक समाज में, उनकी सोच और कार्रवाइयों ने प्रेरित किया, जिसमें प्रत्येक वर्ग के लोगों का अधिकार और आत्मनिर्भरता का मौका मिलता है। डॉ. भीमराव आंबेडकर जी के विचार और उनके द्वारा किए गए प्रयासों से नए भारत की नींव को मजबूती मिलेगी, जहाँ सभी नागरिक समानता, न्याय और स्वतंत्रता का हिस्सा बन सकेंगे ऐसा कहा जा सकता है।

## भारत की मुद्रा समस्या

'भारत की मुद्रा समस्या' एक व्यापक और गंभीर आर्थिक चुनौती थी जिसने भारतीय समाज को समृद्धि और विकास की दिशा में समूहिक रूप से सोचने के लिए प्रेरित किया, और इसमें मुद्रा समस्या एक महत्त्वपूर्ण कारक थी जिस पर डॉ. आंबेडकर ने कार्य किया।

उन्होंने समाज में असमानता और विभेद के खिलाफ अपनी आवाज़ बुलंद की। उनका उद्देश्य था समृद्धि से भरा समाज बनाना, जहाँ सभी वर्गों के लोगों में समानता हो। मुद्रा समस्या इस समृद्धि की दिशा में एक बड़ा प्रभाव डाल रही थी, क्योंकि इससे विभेद, असमानता और आर्थिक असंतुलन हो रहा था।

आंबेडकर जी की आर्थिक दृष्टि ने भारतीय समाज को समृद्धि की दिशा में

मार्गदर्शन किया और उन्होंने आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए कई उपायों को प्रस्तुत किया। वे सामाजिक न्याय, समानता और विकास के सिद्धांतों के साथ एक सकारात्मक और सुधारात्मक दृष्टिकोण रखते थे, जिससे विभेद, असमानता और आर्थिक विघ्नों का समाधान हो सकता है।

आधुनिक समाज में भी, आंबेडकर जी की सोच और उनकी कार्रवाइयों ने आर्थिक समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रेरित किया है।[3] निःसंदेह उनकी योजनाएं जैसे कि समाज में शिक्षा के प्रति समर्पण, आर्थिक समानता के सिद्धांत और सामाजिक न्याय के प्रति समर्पण ने भारतीय समाज को एक नए स्तर पर ले जाने में मदद की है।

## कृषि और भूमि सुधार

कृषि और भूमि सुधार एक ऐसा क्षेत्र है जो डॉ. भीमराव आंबेडकर जी की सोच और उनके उदार दृष्टिकोण के अधीन भारतीय समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने भूमि और कृषि सुधार के माध्यम से समृद्धि की दिशा में अपना योगदान दिया।

आंबेडकर जी ने कृषि क्षेत्र में सुधार के लिए विभिन्न योजनाएं बनाईं और उन्होंने किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त करने के उपायों का समर्थन किया।[4] उनकी योजना बनाने का उद्देश्य था कि कृषि क्षेत्र में असमानता को कम किया जाए और किसानों को और अधिक सुधारित तकनीक का उपयोग करने का अवसर मिले। उनका दृष्टिकोण यह था कि भूमि सुधार और कृषि क्षेत्र में विकास एक समृद्धि से भरा और सामाजिक रूप से विकसित समाज बनाने का माध्यम हो सकता है।

इसलिए उन्होंने सिर्फ कृषि क्षेत्र में सुधार की बात नहीं की, बल्कि उन्होंने भूमि सुधार के महत्त्व को बताया। उनकी योजनाओं ने भूमि सुधार की प्रक्रिया में सुधार किया और उन्होंने किसानों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में मदद की।[5]

आधुनिक समाज में भी, डॉ. भीमराव आंबेडकर जी की योजनाएं कृषि और भूमि सुधार के क्षेत्र में अद्वितीय योगदान की दिशा में बढ़ाई गई हैं यह देखकर सुखद लगता है।

## उद्योगों का राष्ट्रीयकरण

राष्ट्रीयकरण के माध्यम से, उद्यमिता को सहारा मिलता है और यह उद्योगों को विकसित करने में सहायक होता है। यह नए और सुचारु बाज़ारों का निर्माण करने में भी मदद करता है, जिसमें अधिक रोजगार सृजन होता है और देश की आर्थिक वृद्धि होती है।

डॉ. भीमराव आंबेडकर का योगदान भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण रहा है। वे भारतीय संविधान के मुख्य रचनाकार थे तो उनका सपना एक समृद्धि भरा भविष्य था, जिसमें हर व्यक्ति अपनी स्थिति को सुधारने में सक्षम होता है।

उनकी अद्‌भुत विचारशीलता सामाजिक रूप से विकसित समाज की नींव रखती हैं जो उनकी योजनाएं और उपायों से विभिन्न वर्गों के लोगों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में मदद की और समाज में समर्पित नागरिकों की ताकत बढ़ाई।

इस प्रकार उद्योगों के राष्ट्रीयकरण के माध्यम से डॉ. आंबेडकर ने समृद्धि से भरा भविष्य स्थापित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण प्रयास किया। इसके परिणामस्वरूप, समृद्धि, सामाजिक न्याय और समानता का आधुनिक दृष्टि में विकास हुआ है।

## प्रजातांत्रिक राज्य समाजवाद

प्रजातांत्रिक राज्य समाजवाद का मतलब है कि एक राष्ट्र में सत्ता जनता के हाथ में होनी चाहिए और समाज में सामाजिक न्याय को बनाए रखना चहिए। डॉ. आंबेडकर जी ने यहाँ तक कहा कि समाजवाद भी आवश्यक है, क्योंकि समाज में विभेद, जातिवाद और असमानता से निर्मित बाधाएं केवल व्यक्तिगत सत्ता का उपयोग करके नहीं हटाई जा सकती।[6] उनका मानना था कि राजनीतिक सत्ता को जनता के हाथ में सौंपने से ही समाजवाद की दिशा में योजना और कार्यान्वयन हो सकता है।

आंबेडकर जी ने अपने विचारों में समाजवाद को सुधारने के लिए न्याय, समानता और विकास के माध्यम से राजनीतिक सत्ता को प्रभावशाली बनाने की बात की। उनका मानना था कि समाजवाद जनता के हित में ही सत्ता का विस्तार कर सकता है।

## स्वतंत्र उद्यमिता अर्थव्यवस्था

आंबेडकर जी ने भारतीय समाज में स्वतंत्र उद्यमिता के महत्त्व को समझते हुए, उत्कृष्ट आर्थिक स्थिति के लिए व्यक्तियों को स्वतंत्र रूप से अपना रोजगार चुनने का अधिकार देने की बात की। उनका दृष्टिकोण था कि व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनने के लिए उन्हें स्वतंत्रता और विकल्प का मौका मिलना चाहिए, जिससे समाज में सामाजिक और आर्थिक समानता हो सके।

## भारतीय महिलाओं का आर्थिक सुधार

डॉ. आंबेडकर ने उत्पीड़न, जातिवाद और सामाजिक असमानता के कारण होने वाले महिला उत्पीड़न को समाप्त करने और महिलाओं को समाज में आर्थिक रूप से

सशक्त बनाने के लिए उनके समर्थन की बात की। उनकी योजनाओं का मुख्य उद्देश्य महिलाओं को समाज में समानता और स्वतंत्रता का अधिकार प्रदान करना था, जिससे वे अपने पूर्ण सामर्थ्य को प्राप्त कर सके।[7] हिन्दू कोड बिल, एक मील का पत्थर संकल्पना थी।

उनका योगदान आधुनिक समाज में समानता और स्वतंत्रता के हक को महिलाओं को प्राप्त करने में मदद करने में महत्त्वपूर्ण है और भारतीय महिलाओं को आर्थिक व सामाजिक न्याय में सुधार में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रदान की है।

## आंबेडकरवादियों को जोखिम

डॉ. भीमराव आंबेडकर का मूल उद्देश्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समानता की स्थापना करना और अनुसूचित वर्गों को समाज में सम्मान और समानता दिलाना था।[8] इस सिद्धांत के प्रति अपने पक्ष को प्रेरित करने के कारण, आंबेडकरवादियों को समाज में कई प्रकार के जोखिमों का सामना करना पड़ता है।

आंबेडकरवादी आंदोलन और प्रतिष्ठान निरंतर गरिमा और समानता की माँग करते हैं, जिससे कई बार उन्हें समाज में संघर्ष और जोखिमों का सामना करना पड़ता है। उन्होंने अपने आंदोलनों में अनुसूचित जातियों को सामाजिक असमानता, उत्पीड़न और न्याय के मुद्दों पर जागरूक करने के लिए एकजुट किया।

उनका संघर्ष और उनका समर्पण समाज में जागरूकता फैलाई है और आत्मनिर्भरता के अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।[9]

भारत और विदेश में बाबासाहेब आंबेडकर के नाम पर कई एनजीओ हैं। दुर्भाग्यवश, आंबेडकर के वास्तविक विचार जनता तक उचित रूप से पहुँच नहीं रहे हैं। इन एनजीओ का ध्यान अधिकतर सरकारी कोष से पैसे कमाने में है, बल्कि आंबेडकर के वास्तविक संदेश को फैलाने की ओर उन्हें अधिक रुचि नहीं है। आधुनिक समाज में आंबेडकर जी की विचारधारा को लागू करने में काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।[10] ये समस्याएं निम्नलिखित हैं :

- **दलितों में नई-नकली धनी संस्कृति का खतरा :** आरक्षण के लाभ प्राप्त करने के बाद, उन दलितों में नई-नकली धनी संस्कृति का विकास हो रहा है, जिससे आंबेडकरवादी विचारों को खतरा है। इस वर्ग में से कई लोग आंबेडकरवादी विचारों का प्रसार कर सकते थे, लेकिन वे नकली धनी संस्कृतिक का आनंद ले रहे हैं और इसे अपने बच्चों को भी स्थानांतरित कर रहे हैं।

- **आंबेडकर की पूजा भक्तिमूलक रूप में :** बाबासाहेब आंबेडकर ने खुद कहा था कि जिस दिन लोग उन्हें पूजने और उनकी फोटो/मूर्तियों को माला पहनाने लगेंगे, उस दिन उनकी वास्तविक मृत्यु होगी। यदि हम आंबेडकर को हिन्दू देवताओं की पंक्तियों में खड़ा कर दें, तो यह उनके सिद्धांत के खिलाफ होगा। पूजा की बजाय, आंबेडकर के विचारों का अनुसरण करना जरूरी है।

- **आंबेडकरवाद का अगली पीढ़ी में स्थानांतरण :** आंबेडकरवाद और आंबेडकर की संघर्षशील जीवनी की अगली पीढ़ी तक पहुँचाने में हम असफल हो रहे हैं। अगर हम अपनी आने वाली पीढ़ी को आंबेडकर और उनके विचारों की समझ नहीं करवाते हैं, तो आंबेडकरवाद सिर्फ पुस्तकालयों तक ही सीमित रहेगा।

- **सामाजिक विचारधारा की कमी :** व्यापारीकरण और प्रतिस्पर्धी बाज़ार की वजह से हमारे लोग सिर्फ उसी दिशा में सोच रहे हैं। सामाजिक विचारधारा के पक्ष में केवल बहुत कम लोग हैं और रोज़ाना की जिम्मेदारी लेने के लिए उत्साही व्यक्तियों की कमी है।

- **धार्मिक और आध्यात्मिक विचारधारा के साथ संबंध :** सामाजिक विचारधारा को धार्मिक और आध्यात्मिक विचारधारा से जोड़ना जरूरी है। आध्यात्मिक विचारधारा के अनुयायियों की संख्या सामाजिक विचारधारा के अनुयायियों से कहीं अधिक है। देखा गया है कि धार्मिक/आध्यात्मिक विचारधारा सामाजिक विचारधारा पर प्रभाव डाल रही है। यह एक पैन इंडिया फैनोमेना है कि और भी अधिक दलित किसी भी प्रकार के आध्यात्मिक/धार्मिक दृष्टिकोण को अपना रहे हैं। कोई दूसरा विचार नहीं है कि शुद्ध आध्यात्मिक दृष्टिकोण मानसिकता को कमजोर करते है। एक कमजोर मन सामाजिक क्रांति की सोच नहीं सकता है।

डॉ. भीमराव आंबेडकर, भारतीय समाज में गहरा प्रभाव छोड़ने वाले एक महान विचारक थे। उनके दर्शन और सोच ने समाज में समानता और न्याय की बातें साझा कीं, लेकिन क्या डॉ. भीमराव आंबेडकर के विचारों का आधुनिक समाज में अभिवादन है, या फिर उनकी विचारधारा को लागू करने में कठिनाइयाँ हैं, यह एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न है। आजकल हम उनके विचारों को समाज में विश्वसनीयता के साथ स्वीकार करते हैं, लेकिन इसके साथ ही हमें यह भी देखना होगा कि क्या उनकी सोच को सामाजिक, आर्थिक और

राजनीतिक संरचनाओं में सही रूप से शामिल किया जा रहा है। क्योंकि आंबेडकर के सोचने का तरीका और उनके द्वारा सुझाए गए समाधान आज के समाज के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। यह प्रश्न हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या आंबेडकर के विचारों को समाज में पूरी तरह से स्वीकृति दी जा रही है या फिर उन्हें लागू करने में हमें अभी भी कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। कौन-कौन से क्षेत्र हैं जहाँ उनकी विचारधारा को लागू करना संभावनाओं और चुनौतियों के साथ आता है?

हम उनके विचारों के प्रभाव और उनकी सामाजिक मूल्यांकन की मजबूती और कमजोरियों को समर्थन करने के लिए अद्वितीय उपायों की खोज में सक्षम हो सकते हैं, ताकि हम एक समृद्ध और समाजवादपूर्ण समाज की दिशा में बढ़ सकें। इसके लिए हमें नई दृष्टि विकसित करनी होगी। अच्छे समाज का निर्माण हम तभी कर सकेंगे।

## संदर्भ


1. Speech dilivered by Dr. B.R. Ambedkar before the members of the Poona District Law Library on 22, December 1952] quoted in Dr. Ambedkar College, Magazine, Mahad,1962
2. बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय खंड-9, डॉ. आंबेडकर प्रतिष्ठान, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली-1, संस्करण : अगस्त, 2020, पृष्ठ-51-84
3. www.Google.com Shweta Wankhede, Imact of Ambedkar thoughts on Indian Economy.
4. बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय खंड-2, डॉ. आंबेडकर प्रतिष्ठान, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली-1, संस्करण : अगस्त, 2020, पृष्ठ-229
5. वही, पृष्ठ 261
6. Ray SP, Ray IA. Dr. B.R. Ambedkar and his thought on socialism in India-A critical evaluation. Journal of Human Science. 2012 Jul 14;9(2):236-52
7. Singariya Mr. Dr. BR Ambedkar and women empowerent in India. Quest Journals Journal of Research in Humanities and Social Science. 2014;2(1):1-4
8. बाबासाहेब डॉ. आंबेडकर सम्पूर्ण वाङ्मय खंड-10, डॉ. आंबेडकर प्रतिष्ठान, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, नई दिल्ली-1, संस्करण : अगस्त, 2020, पृष्ठ-27-83
9. वही, पृष्ठ-321-411
10. Mandal BC. An Overview of Dr. Ambedkar's Ideas of Education and its Relevance in the Present Indian Situation. BR Ambedkar's Idea of Education and its Relevance in the Present Indian Situation (April 1, 2023). Asiatic Society Monthly Bulletin, 2023; 52(4):13-20